रिकार्डः-यह कौन आज आया:-* ओमशान्ति प्रातःक्लास 26-1-68

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ कर रूहानी बच्चों को समझाते हैं। बाप खुद कहते हैं मैं जब आता हूँ तो किसको भी पता नहीं पड़ता है। क्योंकि हैं गुप्त। तुम बच्चे भी हो गुप्त। गर्भ में भी जब आत्मा प्रवेश करती है तो प्रवेश होने का मालूम थोड़े ही पड़ता है। तिथ-तारीख़ निकल न सके। जब गर्भ से बाहर निकलते हैं वह तिथ-तारीख़ निकलते हैं। तो बाप की प्रवेशता की तिथ तारीख़ का भी पता किसको नहीं पड़ता है। प्रवेश कब किया कब रथ में पधारा मालूम नहीं पड़ता। कोई को देखते थे तो नशे में आ जाते थे। समझा कुछ प्रवेशता है। या मेरे में ताकत आ गई है। ताकत भी कहां से आई। मैं ने खास कोई जप-तप आद थोड़े ही किया। इसको कहा जाता है गुप्त। तिथ-तारीख़ कुछ नहीं। और सभी मनुष्य मात्र के तिथ-तारीख होते हैं। शंकर तो आता ही नहीं है। क्या वह सूक्ष्मवतन में सदैव हैं ही हैं। वा कब से हैं। सूक्ष्मवतन की स्थापना कब होती है यह भी कह नहीं सकते। मुख्य बात तो है मनमनाभव। बाप कहते हैं हे आत्माओं तुम मुझे अपने बाप को बुलाते हो कि आकर पतित को पावन बनाओ। पावन दुनिया बनाओ। बाप समझाते हैं ड्रामा प्लैन अनुसार जब आता हूं तो चेंज जरूर होनी है। सतयुग से लेकर जो कुछ पास हुआ वह फिर रिपीट करेंगे। सतयुग त्रेता.. फिर जरूर रिपीट करेंगे। सेकन्ड2 पास होता जाता है सम्वत भी पास होता जाता है। कहते भी हैं सतयुग पासट हुआ। देखा नहीं। बाप ने समझाया हैं तुम यह सब पास किया है। तुम ही पहले2 हम से बिछुड़े हो। तो इस पर गौर करना होता है। कैसे हम ने 84 जन्म लिये हैं। जो फिर हू बहू लेने पड़ेंगे। अर्थात सुख और दुःख का पार्ट बजाना होगा। सुख-दुःख का खेल कोई बड़ी बात नहीं है। सतयुग में होता है सुख, कलियुग में होता है दुःख। नई दुनिया में बहुत सुख, पुरानी दुनिया में है दुःख। मकान पुराना होता है तो कहां से छत बहेंगे- कहां से कुछ होगा। पुराना हो जाता है इसका मरम्मत करनी है। बहुत पुराना होता है तो समझा जाता है अब यह मकानरहने लायक नहीं है। नईदुनिया को तो ऐसे नहीं कहेंगे। अब तुम लायक दुनिया अर्थात नई दुनिया में चलते हो। हर चीज़ पहले नई फिर पुरानी होती जरूर है। अभी यह तुम बच्चों के ख़याल में आया है और कोई तो समझ न सके। ख़याल में ही नहीं आता। गीता, भगवद्, रामायण आद सुनाते ही रहते। जो सिखाते हैं उसमें ही बिज़ी रहते हैं। तुम हम भी बिज़ी थे ना* अपने2 धंधों में। अभी समझते हैं बेहद के बाप ने हम बच्चों को कितना समझाया है। बाप कहते हैं यह पुरानी दुनिया ख़त्म होनी है। अभी नई दुनिया में चलना है। ऐसे भी नहीं सभी चलेंगे। सभी मुक्तिधाम में जा बैठे फिर तो प्रलय हो जावे। कायदा नहीं। बच्चों की बुद्धि में सारा चक्र है। तुम जानते हो यह पुरानी दुनिया और नई दुनिया का कल्याण कारी यह पुरुषोत्तम संगम युग है। अभी चेंज होनी है। बाकी शान्तिधाम में चले जावेंगे। वहां तो दुःख-सुख की भावना ही नहीं। यह भी गायन हैं यज्ञ में विघ्न पड़े। सो तो पड़ते रहते हैं। कल्प बाद भी यह विघ्न पड़ेंगे। तुम पक्के हो गये हो। स्थापना विनाश यह कोई छोटा काम थोड़े ही है। विघ्न किस बात में पड़ती है। क्योंकि बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। तो इस पर अबलाओं पर अत्याचार होते हैं। द्रौपदी की बात हैं ना। यह ब्रह्मचर्य पर ही खिट-पिट होती है। गालियां भी गीता सुनाने वालों को ही दी है। बाकी शास्त्रों में तो सभी हैं मनुष्यों की बनाई हुई बातें। वह सभी हैं भक्ति मार्ग के शास्त्र। जो कि पढ़ते ही आते हैं। अभी तुम समझते हो वह सब झूठ है। झूठ के कारण पाप बढ़ते ही जाते हैं। सतोप्रधानसे तमोप्रधान बनना जरूर है। यह भी तुम समझते हो। सीढ़ी उतरनी होती है। दुनिया पुरानी होनी ही है। यह सभी बातें तुम बच्चे ही समझते हो। तो उनका सिमरण भी करना चाहिए। फिर दूसरों को समझाना भी है। पढ़ कर टीचर बनते हैं जरूर नालेज बुद्धि में है तब ही पास हो टीचर बनते हैं। फिर टीचर से जो सिख कर होशियार होते हैं तो गवर्मेन्ट उनको पास करती है। वह टीचर सिखलाने लायक है। तुम भी टीचर बनते हो ना। बाप ने तुमको टीचर बनाया है। एक टीचर

क्या कर सकते। तुम सभी हो रूहानी टीचर्स। तो बुधि में यह नालेज रहनी चाहिए। समाचार बच्चों ने सुना जयपुर में स्पीचर आया, तो नालेज़ पर मोहित हो गया। ज्ञान तो बिलकुल ही स्क्युरेट है। मनुष्य से देवता बनने का। तो टीचर का मान रहा ना। आगे चल कर देखना क्या होता है। माया भी उनके पि छाड़ी ही पड़ेगी। मुझेंगे पता नहीं शास्त्र राईट हैं या यह बच्चियां राईट हैं। अभी बच्चों को राईट समझते तो माथा झुकाते हैं। लाईट भी देखते हैं। जितना तुम बाप को याद करते रहेंगे तो लाईट आते रहेंगे। मनुष्यों को साक्षा होता रहेगा। क्योंकि आत्मा प्युर बनेगी ही याद से। फिर किसको सा0 भी हो सकता है। बाप भी तो मददगार बैठा है। वह भी प्रवेश करेगा। बाप तो हमेशा बच्चों के मददगार होते ही है। पढ़ाई में भी नम्बरवार तो होते हैं ना। नाम नहीं लिया जाता है। हरेक को अपनी बुधि से समझना चाहिए कितनी धारणा होती है। अगर धारणा है तो ज्ञान समझाये दिखावे ना। यह है ज्ञान धन। रत्न। देते नहीं तो कोई मांगेगा नहीं कि इनके पास धन है। मनहुस भी होते हैं ना। दूसरों का भी कल्याण करना है। धन ले फिर दान करेंगे तो महादानी कहेंगे। महादानी, महावीर, महारथी बात एक ही है। सभी एक जैसे तो बन न सके। तुम्हारे पास कितने आते हैं एक एक से बैठ माथा मारना होता है। वह लोग तो अखबारों द्वारा तो बहुत बातें सुनते हैं। तो चमकते हैं। फिर जब तुम्हारे पास आये सुनते हैं तो कहते हैं पर मत क्या2 सुना, यहां तो बहुत ही फर्क है। एक एक को माथा को ठीक करने में कितनी मेहनत लगती है। यहा भी कितनी मेहनत लगती है। कोई महारथी हैं, कोई घोड़ेसवार, प्यादे। यह भी ड्रामा में पार्ट है। यह भी तो समझते हैं आखिरीन में जीत तो हमारी ही होनी है। जो अन्दाज़ कल्प पहले बना था वह जरूर बनना है। पुरुषार्थ तो बच्चों को करना ही पड़ता है। बाप राय भी देते रहते हैं। समझाने की कोशिश करो। ऐसे भी नहीं कि भाजी आद वाले पास जाओ। पहले तो शिव बाबा के मंदिरों में जाये सर्विस करो। तुम पूछ सकते हो यह कौन है, इस पर क्यों पानी चढ़ाते हो। तुम बच्चे तो अच्छी रीत जानते हो। कहते हो ना गया टान्डे पर, मालिक हो बैठा। यह तुम्हारा दृष्टान्त है। तुम जाते हो जगाने लिए। शिव के मंदिर में तो ढेर जाते हैं। काशी में विद्धुत मंडली भी है। वहां से भी समाचार आया हैम्युज़ियम के ओपनिंग में विद्धुत मंडली वालों को बुलाते हैं। तो लिखा है हमको जगदीश मदद लिये चाहिए। जानते हैं जगदीश तीखा है। संजय है ना। बुलाते हैं तो उनको खुशी होनी चाहिए हम लड़ाई पर जाता हूं। ऐसा निमंत्रण आये तो खुश होना चाहिए। और काम छोड़ पहले वहां। काशी में बड़े पंडित विद्धुत मंडली के हैं जो टाईटल देते हैं। कोई अपनेऊपर भी टाईटल लगाते हैं। भक्तिमार्ग में कितनी भी कोई होशियारी दिखावे इसमें रखा कुछ भी नहीं है। कितनी मेहनत करते हैं। कितने ढेर मंदिर हैं। वह भी एक धंधा समझ लिया है। कोई अच्छी स्त्री देखे उनको गीता पढ़ना सिखा कर उनको आगे कर देते हैं। फिर जो कमाई होती है उनको मिल जाता है। यह है धंधा। बाकी कुछ भी है नहीं। ऐसे रिद्धी-सिद्धी बहुत ही सिखाते हैं। तो निमंत्रण आया है जगदीश को। वह भी जानते हैं बाबा की बनारस में आंख है। जाकर देखना चाहिए क्या होता है। भल देरी हैं परन्तु जाना तो पड़े ना। वहां होशियार की दरकार है। वहां अगर फेल होंगे तो कहेंगे ब्रह्माकुमारियां कुछ भी नहीं जानती है। इसलिए जाना भी चाहिए। योधों को। वह भी योधे हैं ना। शंकराचार्य ने जाकर शास्त्रार्थ किया था। अभी तुम बच्चों को तो शास्त्रार्थ करना नहीं है। भक्ति के शास्त्र, जिससे दुर्गति को पाते हैं उनका अर्थ थोड़े ही तुमको करना है। तुम तो जाकर बाप और रचना का परिचय देंगे। मुक्ति और जीवनमुक्ति दाता तो एक ही बाप है। उनकी महिमा करनी है। वह कहते हैं अपनको आत्मा समझ मुझे याद करो। मनमनाभव का अर्थ यह नहीं कि गंगा में जाकर स्नान करो। मामेकं याद करो तो मैं प्रतिज्ञा करता हूं तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म हो जायेंगे। रावण जब से आया

है। अभी बच्चों को मालूम पड़ता हैरावणराज्य में हम कितना छीछी बने हैं। आस्ते2 नीचे उतरते आये हैं। यह है ही विषय सागर। अभी बाप अ इस विष के सागर से निकाल तुमको क्षीर सागर में ले जाते हैं। बच्चों को यहां बहुत मीठा लगता है। फिर भूल जाने से क्या अवस्था हो जाती है। बाप कितना खुशी का पारा चढ़ाते हैं। इस ज्ञान अमृत का ही गायन है। ज्ञान अमृत का गिलास पीते रहना है। यहां तुमको बहुत अच्छा नशा चढ़ता है। फिर बाहर जाने से वह नशा कम हो जाता है। बाबा खुद फील करते हैं। यहां फीलिंग बच्चों को आती है। हम अपने घर जाते हैं। हम बाबा के मत पर राजधानी स्थापन कर रहे हैं। हम बड़े बारियर्स हैं। यह सभी बुधि में नालेज है जिससे तुम इतना ऊंच पद पाते हो। पढ़ाते देखो कौन हैं। बेहद का बाप एकदम बदला देते हैं। तो बच्चों के दिल में कितनी खुशी होनी चाहिए। यह भी दिल में आना है औरों को भी खुशी देवें। रावण का है सराप। और बाप का मिलता है वरसा। रावण की सराप से तुम कितना दुःखी अशांत बने हो। बहुत गोप भी हैं जिनके दिल में होती है सर्विस करने परन्तु कलश माताओं को मिलता है। शक्ति-दल है ना। बन्देमातरम गाया हुआ है। साथ में बन्देपितरम तो हैं ही। परन्तु नाम माताओं का है। पहले ल० फिर ना०। पहले सीता पीछे रा०। यहां पहले मेल का नाम फिर फिमेल का नाम लिखते हैं। यह भी खेल है ना। बाप समझाते तो सभी कुछ है। भक्ति मार्ग का राज भी समझाते हैं। भक्ति में क्या2 होता है। जब तक ज्ञान नहीं है तो पता थोड़ेही पड़ता है। अभी तुम समझते हो पहले हम तो जैसे अनपढ़े जट थे। गन्द में पड़े थे। अभी कैरेक्टर्स सभी का सुधरता है। तुम्हारा दैवी कैरेक्टर्स बन रहा है। 5 विकारों से आसुरी कैरेक्टर्स होते हैं। कितनी चेंज होती है। तो चेंज में आना चाहिए ना। शरीर छूट जाय तो फिर थोड़ेही चेंज हो सकेंगे। बाप में ताकत है कितनी चेंज में लाते हैं। अनुभव में सुनाते हैं हम बहुत कामी शराबी कबाड़ी थे। हमारे में बहुत चेंज हुई है। हम बहुत खुशी रहते हैं। प्रेम के आंसू भी आ जाते हैं। बाप समझाते तो बहुत हैं। परन्तु यह सभी बातें भूल जाते हैं। नहीं तो खुशी का पारा चढ़ा रहे। हम बहुतों का कल्याण करें। मनुष्य बहुत दुःखी हैं। उनको रास्ता बतावें। समझाने लिये कितनी मेहनत करनी पड़ती है। गाली भी खानी पड़ती है। पहले से ही आवाज है यह सभी भाई बहन बनाते हैं। अरे भाई बहन का सम्बन्ध तो अच्छा है ना। तुम आत्मायें तो भाई2 हो। परन्तु फिर भी जन्म जन्मान्तर की दृष्टि जो पक्की हुई वह टूटती नहीं है। बाबा के पास तो बहुत पत्र आते हैं। लिखती हैं बाबा हमारे ऊपर बाप की कुदृष्टि रहती है। अभी हम इन से कैसे छूटें। बहुत दुःख होता है। बाबा बचाओ। हमको भाई खराब करते हैं। द्रौपदी ने भी पुकारी ना पति के लिये। यहां तो भाई बाप मामा चाचा काका सभी दुशासन बन जाते हैं। बाप कहते हैं यह कोई नई बात नहीं। कल्प2 हम यही बातें सुनते हैं। तो बाप समझाते हैं इस छीछी दुनिया से तुम बच्चों को ही जाना है। गुल2 बनना है। कितने ज्ञान सुनकर फिर भूल जाते हैं। सारा ज्ञान उड़ जाता है। काम महाशत्रु है ना। काम की आश पुरी न होने से फिर क्रोध में आ जाते हैं। कोई2 तो खुद जाकर पुलिस में रिपोर्ट करते हैं हमको ऐसे मारते हैं। इसमें महावीरणी चाहिए। कुछ सटका भी खानी पड़ती है। 21 जन्म सुख पाने लिये एक जन्म सटका खाया तो कोई हर्जा थोड़ेही है। रीढ़ बकरियां मार खाती हैं। कोई तो फिर छीछी भी होती रहती है। ताकत नहीं। कहां बाहर निकल न सके। बाबा तो बहुत अनुभवी है। इस विकार के पीछे राजाओं ने अपनी राजाई गंवाई है। (मिसाल बताना) काम बहुत खराब है। सभी कहते हैं बाबा यह बहुत कड़ा दुश्मन है। बाप कहते हैं काम को जीतने से ही तुम विश्व के मालिक बनेंगे। परन्तु काम विकार ऐसा करा है जो प्रतिज्ञा कर के भी फिर गिर पड़ते हैं। बहुत मुश्किल से कोई सुधरते हैं। इस समय सारी दुनिया के कैरेक्टर्स बिगड़ा हुआ है। पावन दुनिया कब थी कैसे बनी किसको भी पता नहीं है। इन्होंने यह राज भाग कैसे पाया। कब कोई बता न सके। आगे समय ऐसा आयेगा तुम लोग विलायत आदि में भी जावेंगे। वह भी सुनेंगे तो समझेंगे। पैराडाईज कैसे स्थापन होता है। यह पैराडाईज कब था। कोई को पता नहीं है। आगे तुम भी नहीं समझते थे कि यह स्वर्ग था। हम स्वर्ग के मालिक थे। अभी तुमको कितना मालूम पड़ गया है। तुम्हारी बुधि में है यह

सभी बातें अच्छी रीत है। तो अभी तुम्हारी यही लात और बात रहनी चाहिए। और सभी बातें भूल जानी है। बाप दादा बैठे हैं। कोई भी बात में नाराज़ न होना है। बाप के पास आना चाहिए। बाप सभी दुःख दूर करने वाला बैठा है। तुम्हारे तो सभी दुःख दूर हो जाते हैं। तुम जानते हो हम ट्रान्सफर हो रहे हैं* अपने सुखधाम में। इसकी बहुत खुशी रहती है। लाटरी तुमको बहुत फर्स्ट क्लास मिलती है। तुमको अपनी सम्भाल आपेही करनी है। अपना सुधारा करना है। तुम्हारी है ही योगबल की बात। बाप ही आकर योगबल सिखलाते हैं। तुम योगबल से विश्व के मालिक बन सकते हो। वहलोग आपस में लड़ते हैं, कितने एक दो को ताकत दिखाते हैं। समझते हैं हम जीतेंगे। सभी आपस में लड़ेंगे तो जरूर। दिन प्रति दिन जोर होता जाता है समझते हैं बस अभी लड़ाई लगी कि लगी। उनके अन्दर में होगा मैं जीतुंगा। मैं पावरफुल हूं। क्रिश्चन ही अपास में हैं। उन्हों में ताकत बहुत है। क्रिश्चन्स के पास ही बम्ब आदि हैं। इस पर बहुत खर्चा होता है। उन्हों के पास तो ढेर हैं। कहानियां भी हैं दो आपस में लड़े और लक्ष्मन बीच में तीसरा आ गया। कृष्ण के मुख में चन्द्रमा दिखाते हैं। बाप कहते हैं यह सारी सृष्टि की राजाई उनके मुख में है। राजधानी है ना बड़ी। विचार करो कल्प2 हम राजधानी पाते हैं। बच्चों को बड़ी खुशी अन्दर में रहनी चाहिए। बाप की सर्विस करनी है। ड्रामा हमको जरूर करावेगी। मुख से सारे विश्व की बादशाही का लक्ष्मन है। तो कितनी खुशी होनी चाहिए। हम विश्व के मालिक बनते हैं। बाबा जरूर हमको बनावेंगे। अगर हम श्रीमत पर चलेंगे तो। नम्बरवार नशा रहता है। अभी तुम हो संगम युग पर। तुम्हारा मुंह उस तरफ है। श्मशान के दर पर जब जाते हो तो फिर मुंह फिरायें उस तरफ करते हैं। लात इस तरफ करते हैं। अभी तुम सभी वानप्रस्त में जाने वाले हो। फिर नये घर में जाना है। शांतिधाम सुखधाम को तुम ही जानते हो। तो तुम बच्चों को बहुत ही खुशी में रहना चाहिए। नशा रहना चाहिए नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। फिर उतरता जाता है। यह नशा और कोई नहीं है। यह है सुखधाम जाने का नशा। तुम जानते हो भारत कल क्या था। आज क्या है। हम ही सूर्यवंशी चन्द्रवंशी बने यह खेल है। अभी तुम चले अपने वतन की ओर। शान्तिधाम सुखधाम तुम्हारा वतन है। यहां तुम पराये राज्य में हो। अभी अपना राज्य मिलता है तो उसको ले लेना चाहिए। रोज तुमको प्याला मिलता है तो बच्चों को खुशी का पारा चढ़े। परन्तु ऐसे नहीं कि यहां नशा चढ़े और बाहर निकलने से ही खत्म हो जाये। एक दिन आवेगा जो तुम बहुत खुशी में रहेंगे। निरवा मोत ... निरवा तो जानवर निरन्न ही बनेंगे। तुमको ज्ञान है। हम आत्माएं भी शरीर छोड़कर जाते हैं* अपने घर। फिर लौटेंगे तब तक सभी ठीक ठाक हो जावेगा। बच्चों को सदैव खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए। हम अभी जाते हैं सुखधाम। फिर दुःख बिमारी आदि की बात ही नहीं। छी छी अक्षर सुनने की बात नहीं रहेगी। अच्छा।

यह है सत्य नर से नारायण बनने की कथा। जिसको सत्य अमरकथा भी कहते हैं। तीजरी की कथा भी कहते हैं। इन नेत्रों से तो भल देखो परन्तु तीसरे ज्ञान की नेत्र से अपने शान्तिधाम सुखधाम को याद करते रहो। ऐसे कब कोई सिखला नहीं सकता। बाप ही आकर कहते हैं बाप को याद करो और वर्से को याद करो। शान्तिधाम और सुखधाम को याद करो। बाकी इन आंखों से जो कुछ देखते हो उनको भूल जाओ। बाप नया घर बनाते हैं तो फिर पुराने से दिल हट जाती है ना। यह भी ऐसे है। अभी थोड़ा समय है। इसलिये अपने शान्तिधाम सुखधाम को याद करो। सिखलाने वाले बाप को याद करो तो वहां पहुंच जावेंगे। फिर जितना जो याद करेंगे। इस पुरानी दुनिया में पराया राज्य में तो बाकी थोड़ा समय है। यह कोई अपना राज्य थोड़ेही है। यह तो पराया राज्य है। रावण का सारी दुनिया पर राज्य है ना। सिर्फ लंका में नहीं। सारी दुनिया में रावण राज्य है। इसको बेहद का फारेन राज्य कहा जाता है। एक एक मनुष्य में इन 5 भूतों की प्रवेशता है। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप ~~बाबा~~ दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।

:-शिव बाबा याद है:-